BA-2, Paper-2nd
Topic - Party System
Date - 06.07.2020

Seema Kumari, Asst Prof (Pol Sc), RMC, VKSU

दलीय प्रणाली के सिद्धांत -

राजनीतिक दल अस्तित्व में क्यों आते हैं? वे सामाजिक शक्तियों को किस तरह संगठित और गतिमान करते हैं और इस तरह किन उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं, विभिन्न दलीय प्रणालियां किस तरह विकसित होती हैं और किस तरह कार्य करती हैं - इन समस्याओं की व्याख्या के लिए दलीय प्रणाली के अनेक सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं। इनमें से चार सिद्धांतकारों के सिद्धांत दृष्टिकोण विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं :-

1. वी. आइ. लेनिन का सिद्धांत
2. राबर्ट मिशेल का सिद्धांत
3. मौरिस डुवर्जर का सिद्धांत
4. ज्योवानी सारटोरी का सिद्धांत

1. लेनिन का सिद्धांत - मार्क्सवादी परंपरा के प्रसिद्ध विचारक वी. आइ. लेनिन (1870 - 1924) ने लिखा है कि पूंजीवादी समाज में परस्पर प्रतिस्पर्धा करने वाले दल इसलिए पनपते हैं क्योंकि वे सर्वहारा और बुर्जुआ इन परस्पर विरोधी वर्गों हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। लेकिन समाजवादी समाज में ऐसी प्रतिस्पर्धा की कोई जगह नहीं है। लेनिन के अनुसार सर्वहारा का दल सर्वथा आवश्यक है ताकि वह पूंजीवाद विशेषी संघर्ष में अग्रपंक्ति (vanguard) की भूमिका संभाल सके। लेनिन ने अपनी पुस्तक 'What is to be done' (1902) में यह तर्क दिया कि कामगारों में वर्ग चेतना केवल बाहर से लाई जा सकती है। 1905 में लेनिन ने दलीय संगठन के सिद्धांत का निरूपण करते हुए 'लोकतांत्रिक केंद्रवाद' शब्द का प्रयोग किया। इसका तात्पर्य यह था कि दल का नेतृत्व कौन करेगा

Scanned with CamScanner

इसका निर्णय चुनाव द्वारा किया जाएगा। फिर यह नेतृत्व कामगार वर्ग के प्रति उत्तरदायी होगा, और उपयुक्त सिद्ध न होने पर उसे पद से हटाया जा सकेगा।

लेनिन के अनुसार साम्यवादी दल जनसमुदाय को अपना सदस्य बनाकर और अपनी विचारधारा का प्रचार करके उन्हें समाजवाद की ओर प्रेरित करेगा ताकि वे पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंकने लायक बन सकें। पूंजीवादी समाज में यह दल सर्वहारा सरकार के विपक्ष की भूमिका निभाएगा। क्रांति के बाद जब साम्यवादी दल सत्ता संभाल लेगा, तब वह सर्वहारा का अधिनायकतंत्र स्थापित करेगा।

दलीय प्रणाली के बारे में लेनिन का सिद्धांत वर्ग संघर्ष के ढांचे पर आधारित है। यह पूंजीपति और कामगार वर्गों के परस्पर विरोधी दलों की उत्पत्ति और उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। परंतु उदार लोकतंत्र के ~~अंतर्गत~~ विभिन्न दलों के अस्तित्व और उनकी प्रतिस्पर्धा के मुद्दों पर यह कोई विचार नहीं करता।

राबर्ट मिशेल्स (1876-1936) का सिद्धांत — जर्मन समाजवैज्ञानिक राबर्ट मिशेल्स ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'Political Parties (1911)' के अंतर्गत यह विचार व्यक्त किया है कि राजनीतिक दल का चरित्र अपने समय की ऐतिहासिक अवस्था से निर्धारित होता है। जहां लेनिन ने दलों का विश्लेषण पूंजीपति और सर्वहारा वर्गों के संघर्ष के संदर्भ में किया है, मिशेल्स ने मुख्यतः लोकतंत्र में प्रचलित दलों पर अपना ध्यान केंद्रित किया है।

गुटतंत्र का लौह नियम (Iron law of oligarchy) मिशेल्स ने यह विचार व्यक्त किया है कि किसी भी राजनीतिक दल के सारे निर्णय अंततः एक गुटतंत्र के हाथों में आ जाती है। परंतु

आधुनिक राजनीतिक दल अपने गुटतंत्रीय चरित्र को छिपाकर अपने आपको लोकतंत्रीय छद्मवेष में प्रस्तुत करते हैं।
मिशेल्स के अनुसार, किसी भी शासन प्रणाली को चलाने के लिए संगठन अनिवार्य है। जब कोई समुदाय किसी आर्थिक या राजनीतिक लक्ष्य की सिद्धि का दावा करता है, तब सामूहिक इच्छा की अभिव्यक्ति के लिए संगठन का निर्माण जरूरी होता है। संगठन ऐसा शस्त्र है जिसके बल पर निर्बल पक्ष बलशाली पक्ष के विरुद्ध संघर्ष चलाा सकता है।

गुटतंत्र के लौह नियम के अंतर्गत किसी भी संगठन के अंतर्गत सारी सत्ता अनिवार्यत: इने गिने विशेषज्ञों के समूह के हाथों में केंद्रित हो जाती है। लोकतंत्रीय दल का नेतृत्व शुरु-शुरु में तो जन-भावना से प्रेरित होता है परंतु धीरे-धीरे उसमें ऐसी प्रवृत्ति पैदा हो जाती है तो उसे जनपुंज की भावना से दूर ले जाती है।

मिशेल्स ने तकनीकी विशेषज्ञता और राजनीतिक नेतृत्व में स्पष्ट अंतर नहीं कर पाए हैं। वे दल के भीतर और बाहर से आने वाले दबावों में भी अंतर नहीं कर पाए हैं। जटिल संगठनों के अंतर्गत नेतृत्व के लिए अनेक समूहों में जो प्रतिस्पर्धा चलती है उसकी ओर भी मिशेल्स ने पूरा ध्यान नहीं दिया। फिर भी, यह नियम दलों, संघों, दबाव गुटों और बड़े-बड़े संगठनों के विश्लेषण के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है।

Next notes – Duverger's theory & Sartori's theory.

Scanned with CamScanner